

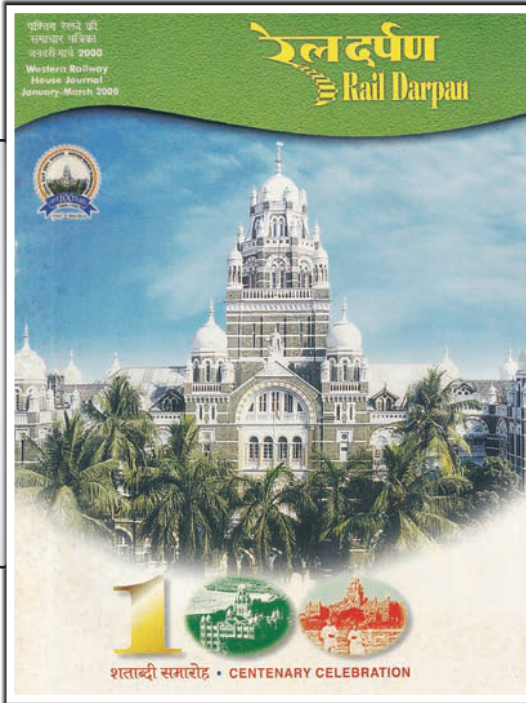
‘इतिहास’ से ‘वर्तमान’ तक की डगर - ‘रेल दर्पण’ का शानदार सफर

आज से लगभग 16 वर्ष पहले जब नई सहत्राब्दी की शुरुआत होने वाली थी, तो पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क विभाग में अपनी गृह पत्रिका शुरू किये जाने पर चिंतन और मंथन चल रहा था और जब इस गृह पत्रिका का नाम ‘रेल दर्पण’ रख कर इसके यथा शीघ्र प्रकाशन का निर्णय लिया गया, तो किसी ने सोचा भी नहीं था कि यह पत्रिका आगे चलकर सृजनात्मक उत्कृष्टता और लोकप्रियता के उच्चतम कीर्तिमान स्थापित करेगी। मगर आज यह अकल्पनीय तथ्य हकीकत बन चुका है और पिछले 16 वर्षों के अपने सफर के दौरान इस उच्चस्तरीय पत्रिका ने विभिन्न महत्वपूर्ण स्तरों पर 35 से अधिक राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल कर अपनी शानदार कामयाबी का सिलसिला लगातार जारी रखा है। आज जब इस पत्रिका का 25 वाँ अंक आपके हाथों में है, तो इन रजत क्षणों को यादगार बनाने के लिए हम यहाँ पेश कर रहे हैं, ‘रेल दर्पण’ के पिछले 24 अंकों के आवरण पृष्ठों एवं उनसे जुड़े उल्लेखनीय पहलुओं की एक अनूठी झलक...

 प्रधान सम्पादक

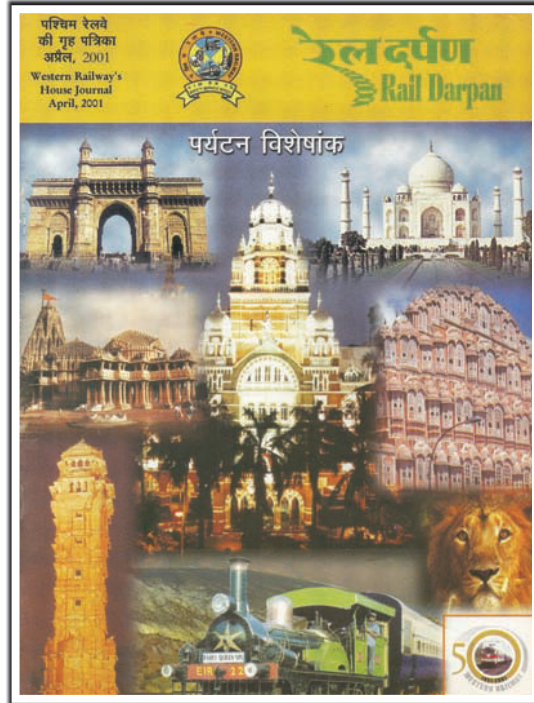
1

★ रेल दर्पण का यह पहला अंक पश्चिम रेलवे के चर्चगेट स्थित प्रधान कार्यालय की ऐतिहासिक इमारत की शताब्दी को समर्पित एक विशेषांक था। ★ 44 पृष्ठों के इस अंक में मुख्य रूप से प्रधान कार्यालय की ऐतिहासिक इमारत से सम्बंधित विशेष लेख और दुर्लभ छायाचित्रों को खास तौर पर शामिल किया गया। ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक तत्कालीन मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री विनोद अस्थाना थे।



2

★ रेल दर्पण का यह दूसरा अंक पर्यटन विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ, जिसमें पश्चिम रेलवे के पर्यटन स्थलों पर विशेष सामग्री पाठकों द्वारा काफी सराही गई। ★ 52 पृष्ठों के इस अंक में चर्चगेट स्टेशन के दुर्लभ छायाचित्रों को दर्शाते विशेष फोटो फीचर- ‘समय के सात रंग : इन्द्रधनुषी चर्चगेट’ को व्यापक सराहना मिली। ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक तत्कालीन मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री मणिजीत सिंह थे।



3

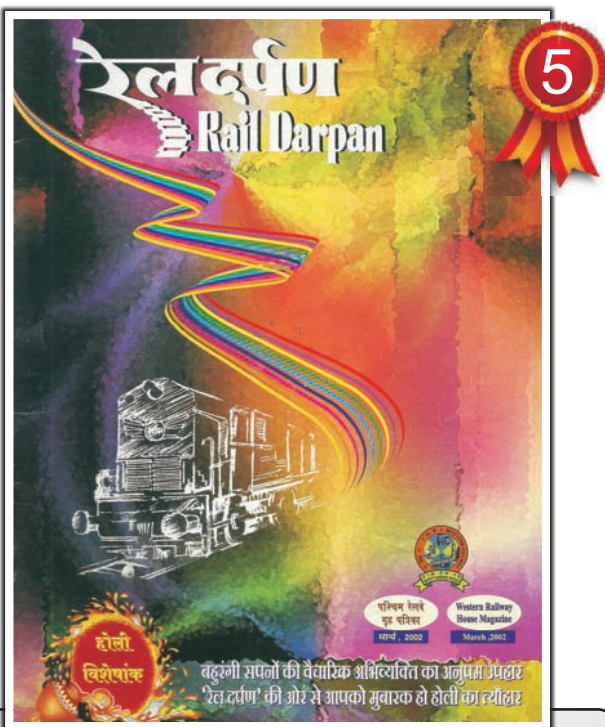
★ रेल दर्पण के इस अंक में गुजरात के कच्छ क्षेत्र में 26 जनवरी, 2001 को आये विनाशकारी भूकम्प के बारे में विशेष जानकारी प्रकाशित की गई। ★ 52 पृष्ठों के इस अंक में पश्चिम रेलवे की दुर्लभ ऐतिहासिक तस्वीरों पर एक विशेष फोटो फीचर- ‘अतीत के झरोखे से’ प्रकाशित किया गया, जो काफी लोकप्रिय हुआ। ★ विभिन्न कहानियाँ, कविताएँ और अंग्रेजी खंड में Humour इस अंक के विशेष आकर्षण थे। ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक तत्कालीन मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री मणिजीत सिंह थे।



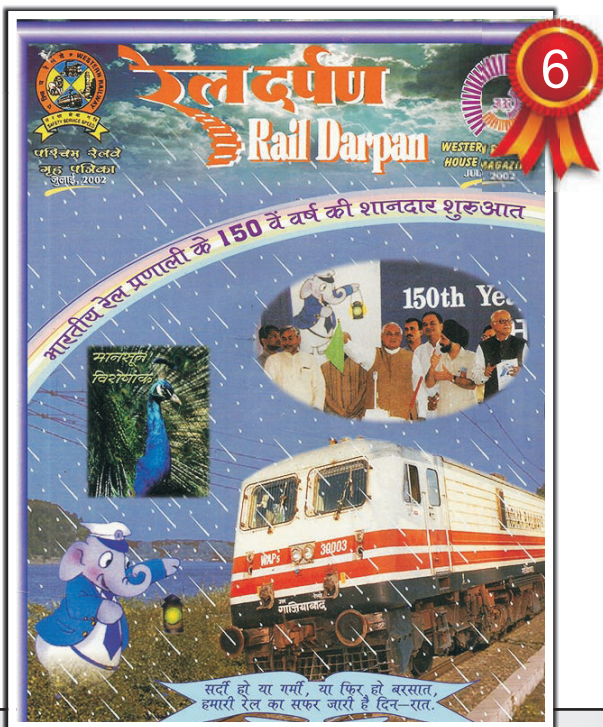
4

★ रेल दर्पण का यह अंक पश्चिम रेलवे के गठन के 50 वर्ष पूर्ण होने पर ‘स्वर्ण जयंती विशेषांक’ के रूप में प्रकाशित किया गया, जिसमें महाप्रबंधक के विशेष लेख के जरिये पाँच दशकों के उल्लेखनीय सफर की रोचक एवं सचित्र जानकारी को पाठकों ने काफी सराहा। ★ 52 पृष्ठों के इस अंक से एक नये स्तम्भ मंडलों के अंवलों से की शुरुआत की गई, जिसमें पश्चिम रेलवे के विभिन्न मंडलों की प्रमुख गति-विधियों एवं उपलब्धियों को आकर्षक तस्वीरों के साथ प्रकाशित किया गया। ★ आकर्षक आवरण पृष्ठ, विभिन्न कहानियाँ, कविताएँ और व्यंग्य लेख इस अंक के विशेष आकर्षण थे। ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक तत्कालीन मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री मणिजीत सिंह थे।





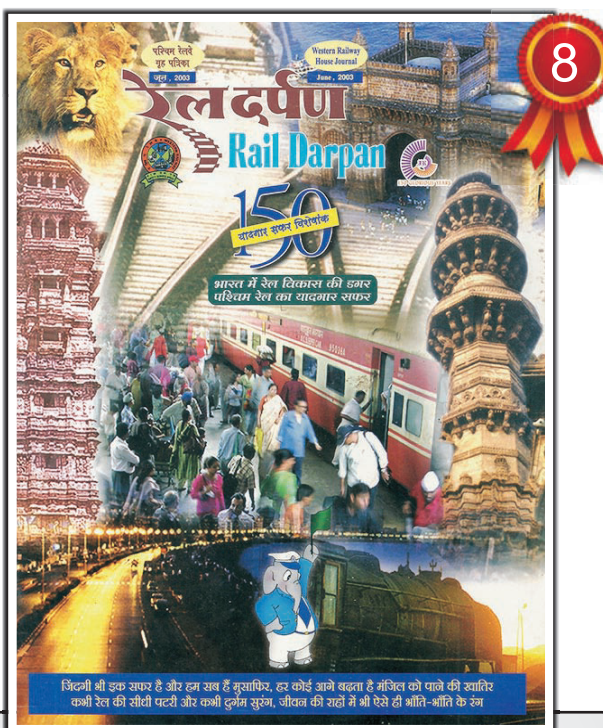
- ★ रेल दर्पण का यह अंक 'होली विशेषांक' था, जिसका आवरण पृष्ठ भी होली के त्योहार के तरह रंग-बिरंगा और सुंदर रंग संयोजन से सजा हुआ था।
- ★ 52 पृष्ठों के इस अंक में पश्चिम रेलवे की दुर्लभ धरोहरों पर एक विशेष फोटो फीचर, विभिन्न कहानियाँ, कविताएँ और सामायिक गतिविधियाँ विशेष आकर्षण थे।
- ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक तत्कालीन मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री मणिजीत सिंह थे, जिनके विशेष लेख 'समय चक्र' में नई सहस्राब्दी के पहले साल में अर्जित उपलब्धियों और गतिविधियों का सचित्र लेखा-जोखा पाठकों ने काफी सराहा।



- ★ रेल दर्पण का यह अंक 'मानसून विशेषांक' था, जिसके आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित काव्यात्मक पंक्तियाँ - 'सर्दी हो या गर्मी, या फिर हो बरसात, हमारी रेल का सफर, जारी है दिन-रात' रेल की फितरत को बखूबी बयान कर रही थीं।
- ★ 52 पृष्ठों के इस अंक में पाठक-पीठिका स्तम्भ में प्रकाशित विभिन्न पत्रों में रेल दर्पण पत्रिका की सृजनात्मकता की जमकर तारीफ की गई।
- ★ इस अंक में भी दुर्लभ तस्वीरों वाले विशेष फोटो फीचर, विभिन्न कहानियों, कविताओं और अन्य रचनाओं को काफी प्रशंसा मिली।
- ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक तत्कालीन मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शैलेन्द्र कुमार थे।



- ★ रेल दर्पण का यह अंक 'नव वर्ष विशेषांक' था, जिसके आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित विभिन्न धर्म स्थलों की तस्वीरों के सुंदर समन्वय के जरिये रेल की धड़कन में बसे सर्व धर्म सम भाव के स्पंदन को असरदार अभिव्यक्ति प्रदान की गई।
- ★ 52 पृष्ठों के इस अंक में भारतीय रेल के 150 वर्ष पूर्ण होने पर नये वर्ष का एक विशेष कैलेंडर प्रकाशित किया गया, जिसमें समृद्ध अतीत, गतिशील वर्तमान और उज्ज्वल भविष्य की सतरंगी तस्वीरों की जमकर तारीफ की गई।
- ★ इस अंक में भी दुर्लभ तस्वीरों वाले विशेष फोटो फीचर, स्वास्थ्य चर्चा, वैचारिकी, विभिन्न कहानियाँ, कविताओं और अन्य रचनाओं को काफी प्रशंसा मिली।
- ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक तत्कालीन मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शैलेन्द्र कुमार थे।

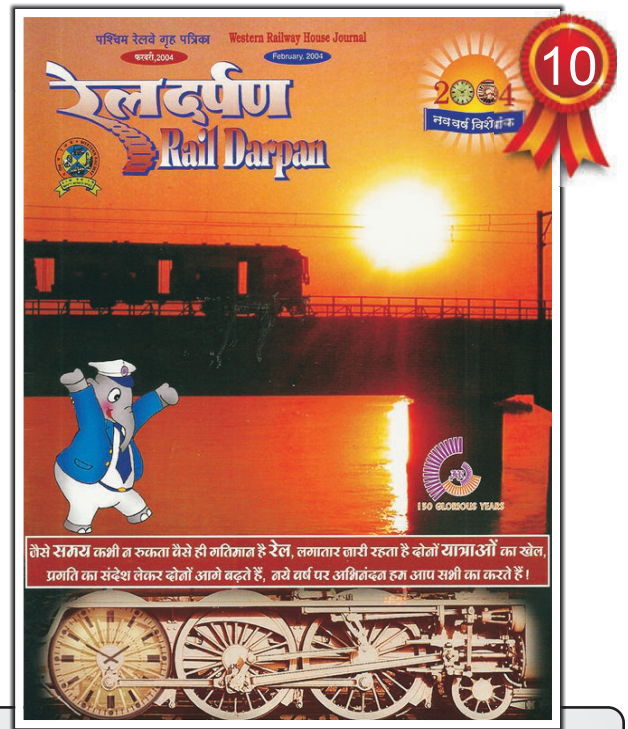


- ★ रेल दर्पण का यह अंक 'यादगार सफर विशेषांक' था, जिसके आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित विभिन्न ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की तस्वीरों के जरिये भारतीय रेल के 150 वर्षों के यादगार सफर को सचित्र अभिव्यक्ति प्रदान की गई।
- ★ 52 पृष्ठों के इस अंक में रेल दर्पण के अत्यंत लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की पहली कड़ी का प्रकाशन अंतिम आवरण पृष्ठ पर हुआ था, जिसमें प्रकाशित मशहूर गीतकार श्री गुलजार जी की काव्य रचना - 'छुट्टियाँ गर्मियों की' को जमकर तारीफ मिली।
- ★ इस अंक में भी दुर्लभ तस्वीरों वाले विशेष फोटो फीचर, स्वास्थ्य चर्चा, वैचारिकी, विभिन्न कहानियाँ, कविताओं, तस्वीर बोलती है सहित विभिन्न स्तम्भों को काफी प्रशंसा मिली।
- ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक तत्कालीन मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शैलेन्द्र कुमार थे, जिनके सम्पादकीय - 'जिंदगी भी एक सफर है और हम सब हैं मुसाफिर' को व्यापक तौर पर सराहना मिली।

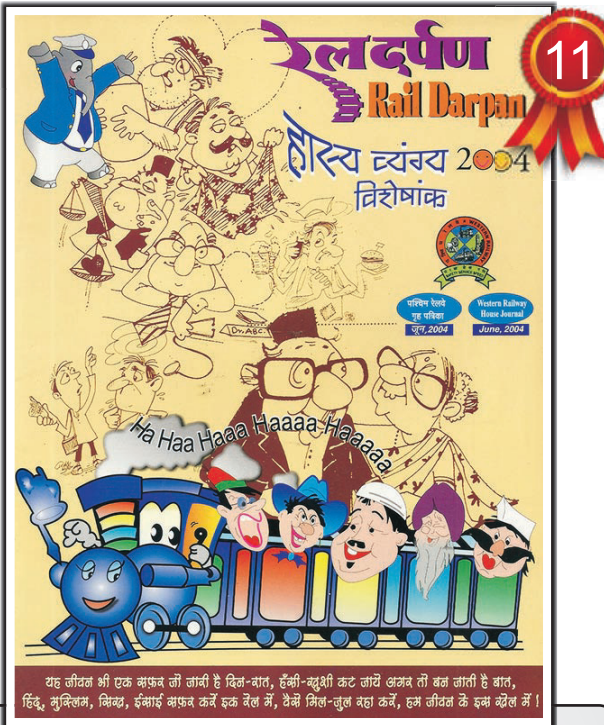


★ रेल दर्पण का यह अंक 'दीपावली विशेषांक' था, जिसमें दीपावली और रेल दोनों को राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान बताते हुए, लोगों में सद्भाव का उजियारा फैलाने के रेल के पैगाम को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की गई। ★ 52 पृष्ठों के इस अंक में रेल दर्पण के अत्यंत लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की दूसरी कड़ी का प्रकाशन अंतिम आवरण पृष्ठ पर हुआ था, जिसमें मशहूर गीतकार श्री जावेद अख्तर जी की काव्य रचना - 'हिल स्टेशन' को खूबसूरत पृष्ठ भूमि वाली तस्वीर के साथ प्रकाशित किया गया।

★ इस अंक में विशेष कलाचित्र दीर्घा के अंतर्गत पश्चिम रेलवे की वरिष्ठ अधिकारी सुश्री रीता राज द्वारा निर्मित नारी मन की कोमल अनुभूतियों से जुड़े कलाचित्रों का भावपूर्ण शब्दांकन के साथ खास अंदाज में प्रदर्शन किया गया, जिसे पाठकों ने खूब सराहा। ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक तत्कालीन मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शैलेन्द्र कुमार थे, जिनके सम्पादकीय - 'रेल' का 'भोलू' लोगों में सद्भाव का उजियारा फैलाये' को काफी पसंद किया गया।



★ रेल दर्पण का यह अंक 'नव वर्ष विशेषांक' था, जिसमें रेल यात्रा की तुलना समय से करते हुए दोनों की गतिशीलता को आवरण पृष्ठ की अभिकल्पना के जरिये बखूबी उजागर किया गया था। इस अंक के आवरण पृष्ठ पर छपे सूर्योदय के साथ वसई रोड पुल से गुजरती लोकल ट्रेन की अनूठी तस्वीर को काफी सराहना मिली। ★ 52 पृष्ठों के इस अंक में रेल दर्पण के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की तीसरी कड़ी के अंतर्गत मशहूर गीतकार श्री कैफे आज़मी जी की काव्य रचना - 'रेल गाड़ी' का प्रकाशन आज भी एक यादगार विरासत के रूप में याद किया जाता है। ★ इसी अंक से 'रेल दर्पण' में किसी दिग्गज हस्ती का इंटरव्यू छापने की परम्परा शुरू हुई, जिसने कालांतर में 'रेल दर्पण' की लोकप्रियता को परवान चढ़ाने में अहम योगदान दिया। इस अंग्रेजी कॉलम की पहली कड़ी के रूप में मशहूर खलनायक श्री प्रेम चोपड़ा के इंटरव्यू को व्यापक तौर पर सराहा गया। ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक श्री शैलेन्द्र कुमार के सम्पादकीय ने रेल की धड़कन में बसे बुलंद इरादों के स्पंदन को बखूबी उजागर किया।



★ रेल दर्पण का यह अंक 'हास्य व्यंग्य विशेषांक' था, जिसमें रेल की दुनिया से जुड़े हास-परिहास को विभिन्न व्यंग्य चित्रों एवं रोचक रचनाओं के जरिये असरदार अभिव्यक्ति प्रदान की गई।

★ 52 पृष्ठों के इस अंक में रेल दर्पण के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की चौथी कड़ी के अंतर्गत मशहूर हास्य कवि श्री शैल चतुर्वेदी जी की काव्य रचना - 'कविफरोश' का प्रकाशन सभी पाठकों के लिए एक सुरुचिपूर्ण तोहफा साबित हुआ।

★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की दूसरी कड़ी के रूप में मशहूर क्रिकेट खिलाड़ी श्री दिलीप वेंगसरकर के साथ बातचीत काफी रोचक रही।

★ इस अंक के प्रधान सम्पादक श्री शैलेन्द्र कुमार ने अपने सम्पादकीय के अलावा मध्य पृष्ठों पर छपे 'हास परिहास : हमारे आसपास' में अपनी विशेष काव्य रचना 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' के माध्यम से समाज में फैली चापलूसी की प्रवृत्ति पर करारा कटाक्ष किया।



★ रेल दर्पण का यह अंक 'उत्सव विशेषांक' था, जिसमें भारतीय समाज के विभिन्न त्योहारों में छिपे हर्ष और उत्साह पर आधारित तस्वीरों और रचनाओं को प्रमुख स्थान दिया गया।

★ 52 पृष्ठों के इस अंक में 'विशेष अतिथि रचनाकार' की पाँचवीं कड़ी के अंतर्गत मशहूर शायर श्री निदा फाजली जी की नज़्म - 'शहर मेरे साथ चल...' के माध्यम से महानगर की बदहवास ज़िंदगी की विसंगतियों को बखूबी पेश किया गया।

★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की तीसरी कड़ी के रूप में मशहूर अभिनेता श्री अक्षय कुमार ने रेल से जुड़ी अपनी यादों को साझा किया।

★ इस अंक के प्रधान सम्पादक श्री शैलेन्द्र कुमार के सम्पादकीय 'आस्था और उत्साह की अभिव्यक्ति है उत्सव' में जीवन के उत्सव को मिल-जुल कर मनाने का संदेश दिया गया।



★ रेल दर्पण का यह अंक मुंबई सेंट्रल स्टेशन के 75 गौरवपूर्ण वर्ष पूर्ण होने पर विशेष रूप से आधारित था, जिसमें मुंबई सेंट्रल स्टेशन के गौरवशाली अतीत और गतिशील वर्तमान को विभिन्न तस्वीरों और आलेखों के जरिये दर्शाया गया। ★ 60 पृष्ठों के इस अंक में 'विशेष अतिथि रचनाकार' की छठी कड़ी के अंतर्गत मशहूर हास्य कवि श्री हुल्लड मुरादाबादी जी की काव्य रचनाओं - 'जिंदगी एक रेलगाड़ी' तथा 'हुल्लड के दोहे' की आकर्षक पेशकश ने पाठकों का भरपूर मनोरंजन किया।

★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की चौथी कड़ी के रूप में मशहूर अभिनेता श्री नाना पाटेकर ने अपनी संघर्षपूर्ण जिंदगी और फिल्मी कैरियर के बारे में खुलकर बातचीत की।

★ इस अंक में वर्ष 1956 में पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय में 10 से 16 अप्रैल तक मनाए गये पहले रेल सप्ताह से सम्बंधित यादगार छायाचित्रों को खास तौर पर प्रकाशन किया गया। ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक श्री श्री शैलेन्द्र कुमार थे।

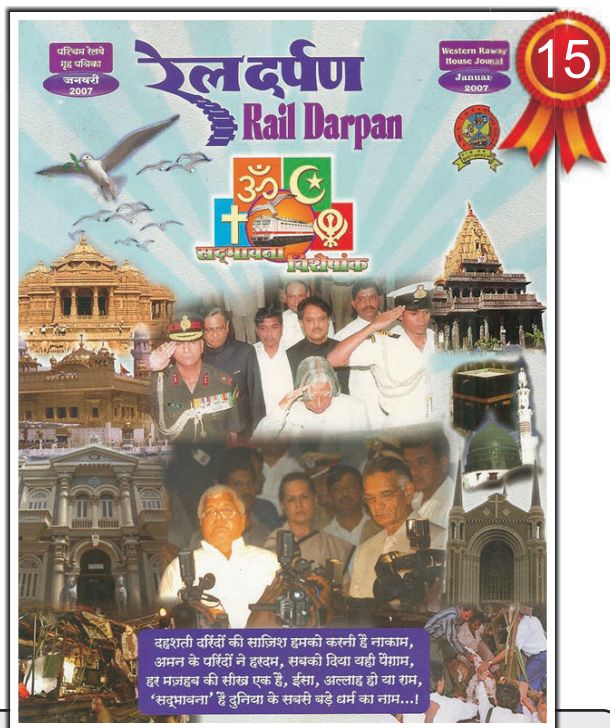


★ रेल दर्पण का यह अंक 'भाप युगीन विरासत विशेषांक' था, जिसमें अतीत की समृद्ध धरोहर रहे भाप इंजनों के बारे में रोचक जानकारी दुर्लभ तस्वीरों के जरिये प्रकाशित की गई।

★ 60 पृष्ठों के इस अंक में 'रेल दर्पण' के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की सातवीं कड़ी के अंतर्गत मशहूर गीतकार श्री गोपाल दास 'नीरज' जी की काव्य रचना - 'दिल के काबे में नमाज' प्रकाशित की गई, जिसमें श्री नीरज जी ने धर्म के नाम पर होने वाले आडम्बर पर तीखा कटाक्ष करते हुए सर्व धर्म समभाव का सार्थक पैगाम दिया है।

★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की पांचवी कड़ी के रूप में बॉलीवुड के सदाबहार नायक श्री देव आनंद जी का साक्षात्कार भी उनकी अदाओं की तरह लुभावना रहा।

★ इस अंक के प्रधान सम्पादक श्री प्रणय प्रभाकर के सम्पादकीय में रेल यात्रा को बेहतर बनाने का दृढ़ संकल्प दोहराया गया।



★ रेल दर्पण का यह अंक 'सद्भावना विशेषांक' था, जिसमें मुंबई की ट्रेनों में हुए बम धमाकों से उपजे दहशती माहौल में अमन और सद्भावना का पैगाम देने की कारगर कोशिश की गई। ★ 60 पृष्ठों के इस अंक में 'रेल दर्पण' के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की आठवीं कड़ी के अंतर्गत मुंबई के ट्रेन धमाकों में अपनी जान नौबत वाले मशहूर हास्य कवि डॉ. श्याम ज्वालामुखी जी की काव्य रचनाएँ - 'अति सर्वत्र वर्जयेत' तथा 'आओ देश बनाएँ!' प्रकाशित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इसी अंक से रेल दर्पण पत्रिका पश्चिम रेलवे की अधिकृत वेबसाइट www.wr.indianrailways.gov.in पर उपलब्ध करा दी गई। ★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की छठी कड़ी के रूप में बॉलीवुड के अभिनेता श्री शशि कपूर जी ने रेल से जुड़ी अपनी पुरानी यादों के बारे में गप-शप की। ★ इस अंक के प्रधान सम्पादक श्री प्रणय प्रभाकर के सम्पादकीय में सद्भावना को दुनिया का सबसे बड़ा धर्म बताते हुए इसे हर ईंसान द्वारा अमल में लाये जाने की ज़रूरत पर बल दिया गया।



★ रेल दर्पण का यह अंक 'धरोहर विशेषांक' था, जिसमें धरोहर को दुनिया की अनमोल दौलत बताते हुए, इसकी आन, बान और शान को बनाये रखने की शपथ सभी पाठकों को दिलाई गई।

★ 68 पृष्ठों के इस अंक में 'रेल दर्पण' के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की नवी कड़ी के अंतर्गत फिल्मि दुनिया के मशहूर गीतकार एवं कमी रेलकर्मी रहे स्वर्गीय शैलेन्द्र जी की खास काव्य रचना 'अंदर भी आग जला' प्रकाशित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। साथ ही उनके फिल्मि कैरियर रोचक जानकारी दी गई।

★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की सातवीं कड़ी के रूप में बॉलीवुड के अभिनेता श्री अनुपम खेर जी ने अपनी शानदार अदाकारी और रेल से जुड़े तजुबों पर गुफ्तगू की।

★ इस अंक के प्रधान सम्पादक श्री प्रणय प्रभाकर के सम्पादकीय - 'जीना इसी का नाम है।' में ईंसानी जिंदगी के फलसफे को बखूबी बयान किया गया।



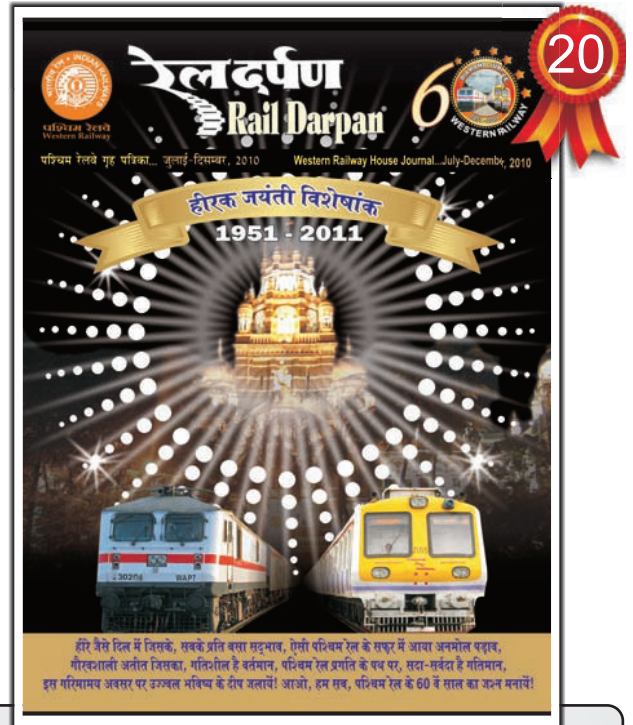
- ★ रेल दर्पण का यह अंक 'नव वर्ष विशेषांक' था, जिसमें रेल की दुनिया से जुड़े डाक टिकटों पर विशेष सामग्री प्रकाशित की गई।
- ★ 68 पृष्ठों के इस अंक में 'रेल दर्पण' के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की दसवीं कड़ी के अंतर्गत भारतीय काव्य जगत की मशहूर कवयित्री श्रीमती माया गोविंद जी की काव्य रचनाओं 'जीवन और रेल' तथा 'पंख भी तो चाहिये जनाब !' का सुरुचिपूर्ण प्रकाशन किया गया।
- ★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की आठवीं कड़ी के रूप में बॉलीवुड के अभिनेता श्री शम्मी कपूर जी ने अपने खास अंदाज़ में अपनी सुपरहिट फिल्मों और रेलवे से जुड़ी यादों को बयान किया।
- ★ इस अंक में नये वर्ष के उपलक्ष्य में पाठकों के लिए रेल परिसर के सामान्य व्यक्तित्वों को महिमा मंडित करते वर्ष 2008 के विशेष कैलेंडर का खास उपहार दिया गया। इस अंक के प्रधान सम्पादक भी श्री प्रणय प्रभाकर थे।



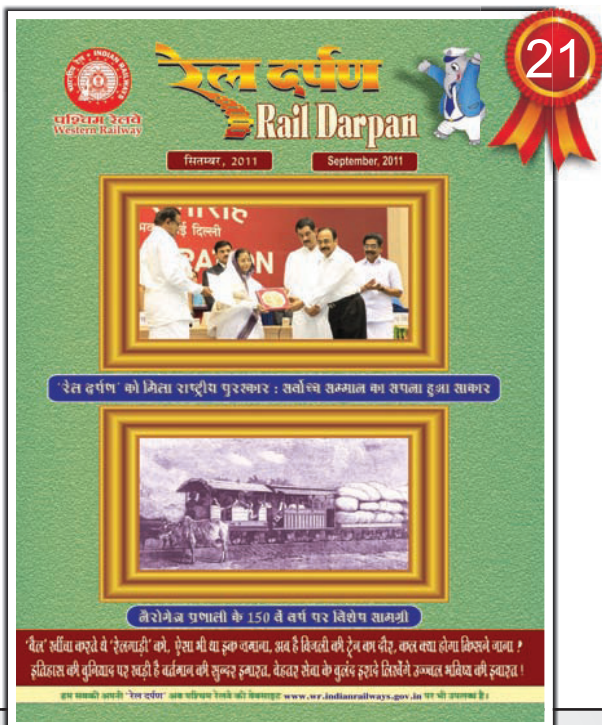
- ★ रेल दर्पण का यह अंक 'प्रगति विशेषांक' था, जिसमें प्रगति की महिमा का बखान करते हुए अपने इरादे बुलंद रखने की सलाह दी गई।
- ★ 68 पृष्ठों के इस अंक में 'रेल दर्पण' के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की ग्यारहवीं कड़ी के अंतर्गत भारतीय काव्य जगत के मशहूर कवि श्री आश करण अटलजी की काव्य रचना 'वो कैसे-कैसे लोग थे ?' का ओजस्वी प्रकाशन किया गया।
- ★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की नवीं कड़ी के रूप में बॉलीवुड के अभिनेता श्री धर्मेन्द्र जी ने अपनी सुपरहिट फिल्म शोले के साथ अन्य फिल्मों में रेलवे से जुड़ी यादों के बारे में खुलकर बातचीत की।
- ★ इस अंक में नये वर्ष के उपलक्ष्य में पाठकों के लिए चर्चगेट स्थित प्रधान कार्यालय में स्थापित हैरिटेज गैलरी पर आधारित वर्ष 2009 का कैलेंडर विशेष उपहार के तौर पर प्रकाशित किया गया। इस अंक के प्रधान सम्पादक तत्कालीन मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री श्याम सुंदर गुप्ता थे।



- ★ रेल दर्पण का यह अंक 'प्रौद्योगिकी विशेषांक' था, जिसमें रेल प्रणाली पर प्रौद्योगिकी के ज़रिये हुई उल्लेखनीय प्रगति को प्रमुखता के साथ दर्शाया गया।
- ★ 76 पृष्ठों के इस अंक में 'रेल दर्पण' के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की बारहवीं कड़ी के अंतर्गत भारतीय काव्य जगत के मशहूर कवि श्री अशोक चक्रधर जी की काव्य रचना 'सद्भावना गीत' का कलात्मक प्रकाशन किया गया।
- ★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की दसवीं कड़ी के रूप में बॉलीवुड के अभिनेता श्री सुनील शेटी जी ने अपनी फौलादी अभिनय और रेलों के विकास के बारे में रोचक चर्चा की।
- ★ वडोदरा स्टेशन से सम्बंधित दुर्लभ छायाचित्रों को दर्शाता विशेष फोटो फीचर इस अंक का विशेष आकर्षण था। इस अंक के प्रधान सम्पादक श्री श्याम सुंदर गुप्ता ने अपने सम्पादकीय में देश की बहुमुखी प्रगति के लिए हर स्तर पर प्रौद्योगिकी को अपनाये जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की।



- ★ रेल दर्पण का यह अंक 'हीरक जयंती विशेषांक' था, जिसमें पश्चिम रेलवे के 60 गौरवशाली वर्षों की प्रगति का उल्लेखनीय लेखा जोखा दिया गया।
- ★ 76 पृष्ठों के इस अंक में 'रेल दर्पण' के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की तेरहवीं कड़ी के अंतर्गत भारतीय काव्य जगत के मशहूर कवि श्री सूर्यमानु गुप्तजी की काव्य रचनाओं की दो गज़लों का प्रकाशन किया गया।
- ★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की ग्यारहवीं कड़ी के रूप में बॉलीवुड के अभिनेता श्री जीतेंद्र जी ने अपनी डासिंग हीरो की छवि और मुंबई के विकास में रेलवे की भूमिका के बारे में रोचक जवाब दिये।
- ★ 5 नवम्बर, 1951 को पश्चिम रेलवे के उद्घाटन समारोह की दुर्लभ तस्वीरों पर आधारित नये वर्ष 2011 का रोचक कैलेंडर इस अंक में विशेष उपहार के तौर पर छापा गया। इस अंक के प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन ने अपने सम्पादकीय में पश्चिम रेल के 60 सालों के महत्वपूर्ण सफर पर रोचक जानकारी प्रदान की।



- ★ रेल दर्पण के इस अंक के आवरण पृष्ठ पर देश की सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका के रूप में महामहिम राष्ट्रपति महोदय के हाथों मिले सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान के गौरवशाली क्षणों को खास तौर पर उजागर किया गया। साथ ही नैरोगेज प्रणाली के 150वें वर्ष पर विशेष फोटो फीचर एवं अन्य खास सामग्री प्रकाशित की गई।
- ★ 76 पृष्ठों के इस अंक में 'रेल दर्पण' के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की चौदहवीं कड़ी के अंतर्गत भारतीय काव्य जगत के मशहूर कवि श्री मधुप पाण्डेय की विभिन्न काव्य रचनाओं को प्रकाशित किया गया।
- ★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की बारहवीं कड़ी के रूप में बॉलीवुड के मशहूर गायक श्री शान के साथ रुबरु साक्षात्कार को पेश किया गया।
- ★ इस अंक में नैरोगेज के 150 वर्षों पर आधारित विशेष फोटो फीचर तथा अंग्रेजी खंड में प्रकाशित प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन के स्पेशल फीचर- War of Currents - Tesla wins over Edison को पाठकों ने काफी साराहा।



- ★ रेल दर्पण के इस अंक में आवरण पृष्ठ पर मुंबई महानगर की डी सी कर्षण पर चलने वाली ई एम यू को दी गई विदाई को खास तौर पर हाईलाइट किया गया।
- ★ 76 पृष्ठों के इस अंक में 'रेल दर्पण' के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की पंद्रहवीं कड़ी के अंतर्गत भारतीय काव्य जगत के मशहूर कवि श्री शैलेश लोढ़ा की विभिन्न प्रभावशाली काव्य रचनाओं को खास तौर पर प्रकाशित किया गया।
- ★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की तेरहवीं कड़ी के रूप में बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता श्री विनय पाठक के साथ अनौपचारिक बातचीत प्रकाशित की गई।
- ★ इस अंक में डी सी लोकल ट्रेन एवं राजभाषा पर आयोजित प्रदर्शनियों की झलक के अलावा अंग्रेजी खंड में प्रकाशित प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन का स्पेशल फीचर-John Pitt Kennedy : The Great Leveller... पाठकों के आकर्षण का विशेष केंद्र रहे।



- ★ रेल दर्पण के इस अंक के आवरण पृष्ठ पर मुंबई एवं अहमदाबाद के बीच चली एसी डबल डेकर ट्रेन की आकर्षक तस्वीर प्रमुखता के साथ छापी गई।
- ★ 76 पृष्ठों के इस अंक में 'रेल दर्पण' के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की सोलहवीं कड़ी के अंतर्गत भारतीय काव्य जगत के मशहूर कवि श्री देवमणि पाण्डेय जी की नये जमाने की दो गजलें खास तौर पर प्रकाशित की गईं।
- ★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की चौदहवीं कड़ी के रूप में बॉलीवुड के मशहूर गायक श्री कैलाश खेर के बातूनी अंदाज़ को रोचक ढंग से पेश किया गया।
- ★ इस अंक में डी सी - ए सी परिवर्तन पर विशेष फोटो फीचर के अलावा अंग्रेजी खंड में प्रकाशित प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन का स्पेशल फीचर-More Train Per Train : The Story of Double Decker समी पाठकों को काफी पसंद आया।



- ★ रेल दर्पण के इस अंक के आवरण पृष्ठ पर मुंबई महानगर में चलने वाली नई लोकल ट्रेन की आकर्षक तस्वीर के साथ नये दौर की नई ट्रेन का अभिनंदन किया गया।
- ★ 76 पृष्ठों के इस अंक में 'रेल दर्पण' के लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' की सत्रहवीं कड़ी के अंतर्गत बॉलीवुड के मशहूर गीतकार एवं शायर श्री नवरा लालपुरी जी की गजलें और गीत पाठकों को सुरीले जमाने में ले गये।
- ★ इस अंक में अंग्रेजी कॉलम इंटरव्यू की पंद्रहवीं कड़ी के रूप में बॉलीवुड के मशहूर नायक श्री सनी देओल तथा पुराने जमाने के सशक्त अभिनेता श्री रमेश देव के साथ साक्षात्कारों ने पाठकों का सार्थक मनोरंजन किया।
- ★ इस अंक में राजभाषा तथा पश्चिम रेलवे नेटवर्क के मुंबई आगमन के 150 वर्षों पर आधारित प्रदर्शनियों की झलक के अलावा प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन का विशेष लेख 'कपास के ज़रिये विकास की अनोखी मिसाल' पाठकों के आकर्षण का विशेष केंद्र रहा।